अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

मध्य गंगा घाटी की ताम्र पाशाणिक संस्कृति की कला

डा0 सुबास चन्द पाल

मध्य गंगा घाटी का भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व में विशिष्ट स्थान है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में बिहार में विस्तृत इस क्षेत्र से परवर्ती उच्च पूर्ण पाषाण काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक की संस्कृतियाँ प्रकाश में आई है। प्रस्तुत शोध–पत्र में इस क्षेत्र की ताम्रपाषाणिक संस्कृति की विशिष्टताओं और कला के अवशेषों का एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

मध्य गंगा घाटी के उत्खनित स्थलों में उत्तर प्रदेश के कौशाम्बी', शृंगवेरपुर, यूँसी', हेतापी, अगियावीर, राजघाट, सरायमोहना', कमौली, अक्था, अक्था, प्रहलादपुर, मसोनडीह'', भूनडीह, बैना'', सोहगौरा'', इमलीडीह, लहुरादेवा, खैराडीह, नरहन और विहार के चिरांद'', ''चेचर कुतुबपुर'', ताराडीह'', सेनुवार, माँझी'', सोनपुर, ओरियम, आदि स्थल सम्मिलित हैं। इन उत्खननों के आधार पर इस क्षेत्र की ताम्रपाषाणिक संस्कृति का संक्षिप्त विवेचन निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है–

इस संस्कृति की पुरातात्यिक सामग्री के अन्तर्गत चाक पर बनी कई पात्र–परम्परायें, पत्थर और हड्डियों पर बने हुए उपकरण, ताम्र उपकरण तथा ब्लेड उद्योग के लघुपाषाण उपकरण सम्मिलित हैं। पात्र–परम्पराओं में लाल, काले लेप वाले तथा काले–और–लाल पात्र परम्परायें हैं, जिनमें से अन्तिम दो को चित्रित भी किया गया है। लघु पाषाण उपकरणों में दन्तुर कटक ब्लेड भी सम्मिलित और पुच्छल तथा छिद्रयुक्त। अधिकतर वाणाग्रों का अनुभाग गोला है, लेकिन कुछ तिकोने अनुभाग वाले वाणाग्र भी प्राप्त हुए हैं। बहुत से वाणाग्र निर्माण की विभिन्न अवस्थाओं में प्राप्त हुए है। इस संस्कृति के लोग बाँस और लकड़ी की बनी झोपड़ियों में निवास करते थे।

पात्रों के आकार में विविधता के प्रमाण लाल पात्र परम्परा में प्राप्त होते हैं– कटोरे, आधारवाले कटोरे, थालियाँ, नाद, तीन पैर वाले तथा छिद्रयुक्त कटोरे और नाद, होंठदार, कटोरे और नाद

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

बड़े और मध्यम आकार के घड़े तथा साधार तश्तरियाँ। चिराँद में नव पाषाणिक संस्कृति की तरह इस संस्कृति में भी टोंटीदार बर्तन प्राप्त हुए हैं।

काले लेप वाले पात्र परम्परा में बर्तनों के अधिक आकार नहीं मिलते हैं। कटोरे और थालियाँ ही प्रायः परम्परा के बर्तन हैं। इसी पात्र परम्परा से परवर्ती काल में उत्तरी कृष्ण ओपदार पात्र–परम्परा का विकास हुआ होगा।

प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा किये गये सर्वेक्षण से मध्य गंगा घाटी के प्रतापगढ़ जिले की पट्टी तहसील में लगभग 30 ताम्रपाषाणिक स्थल प्रकाश में आये हैं। अभी तक इन स्थलों का उत्खनन नहीं किया गया है, लेकिन यहाँ से लाल, काले वाले लेप तथा और लाल पात्र परम्पराओं के मिट्टी के बर्तन, दन्तुर, कटक ब्लेड कोड और फलक से युक्त लघु ब्लेड उद्योग के लघु पाषाण उपकरण मिट्टी तथा अर्थरत्नों के मनके, बाँस, बल्ली के निशान से युक्त मिट्टी के टुकड़े, ताँबे की अगूंठी तथा पत्थर के सिल–लोढ़े प्राप्त हुए हैं। इस क्षेत्र के प्रमुख स्थलों में भाँटी, भेवनी, गंगेहटी, कंजासरॉस गुलानी, मन्दाह–2 पेलखवार, पूरेदेवजानी सरॉय, जमुआरी तथा शाल्हीपुर–2 का उल्लेख किया जा सकता है। ये स्थल इस क्षेत्र के मध्य पाषाणिक स्थलों की ही तरह धनुषाकार झीलों अथवा इन झीलों से निकलने वाली सई की सहायक नदियों के किनारे स्थित है।

उपलब्ध पात्र–परम्पराओं में लाल, काले टेप वाले तथा काले एवं लाल रंग के पात्र प्राप्त हुए हैं। कभी–कभी लाल पात्र परम्परा के बर्तनों पर भी लेप किया गया है। ब्लैक एण्ड रेड वेयर पात्र परम्परा के बर्तनों के भीतरी सतह पर सफेद तथा बाहरी सतह पर काले रंग में चित्र बनाये गये है। चित्रण अभिप्रायों में खड़ी तथा तिरछी रेखायें सम्मिलित हैं। इन स्थलों से पात्रों के जो आकार उपलब्ध हुए हैं इनमें कटोरे, आधार वाले कटोरे, होंठदार कटोरे, थालिया, नाद, पैर वाले छिद्रयुक्त नाद, बीकर और विभिन्न आकार के घड़े उल्लेखनीय हैं। उत्खनन के अभाव में प्रतापगढ़ जनपद की इस संस्कृति के स्वरूप के बारे में हमें अधिक विस्तृत ज्ञान नहीं है लेकिन पात्र प्रकारों, वित्रण अभिप्रायों और लघुपाषाण उपकरणों के आधार पर मध्य गंगा घाटी की ताम्र

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

पाषाणिक संस्कृति का अभिन्न अंग प्रतीत होता है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के घूँसी और हेतापट्टी के उसाननों से भी इस क्षेत्र की ताम्रपाषाणिक संस्कृति पर उल्लेखनीय प्रकाश पड़ा है।

मध्य गंगा घाटी की यह संस्कृति पूर्व में निम्न गंगा घाटी और दक्षिण में विन्ध्य क्षेत्र की ताम्रपाषाणिक संस्कृतियों से कई संदर्भों में जुड़ी हुई प्रतीत होती है। निचली गंगा घाटी की ताम्र पाषाणिक संस्कृति के उत्खनित स्थल पाण्डुराजारढिबि, महिषदल और भरतपुर हैं। पश्चिम बंगाल के वर्षमान जिले में स्थित पाण्डुराजरढिवि, के उत्खनन से हस्तनिर्मित भूरे या पीताभ, लाल, काले और लाल, लाल और चमकीले लाल पात्र परम्परा के बर्तन प्राप्त हुए हैं। काले सफेद रंग से काले और लाल तथा लाल पात्र परम्परा के बर्तनों को चित्रित भी किया गया है। महिषदल'' में भी इन परम्पराओं के बर्तनों को चित्रित किया गया है। बर्तन आकारों में कटोरे, नाद, होंठदार अथवा टीटीदार कटोरे, साधार तश्तरी और कटोरे, ढक्कन, थालियाँ, छिद्रयुक्त वर्तन तथा लम्बे गले के घड़े सम्मिलित हैं। अन्य सांस्कृतिक सामग्री के अन्तर्गत ताँबे के मनके, चूड़ियाँ, नहन्त्री, सुरमा सलाई, कुल्हाड़ी, हड्डियों के वाणाग्र, पिन, कंधे, चूड़ियां, अर्थरत्नों के मनके, दन्तुर कटक ब्लेड से युक्त लघु पाषाण उपकरणों का उल्लेख किया जा सकता है। चमकीली लाल पात्र परम्परा तथा पनरीदार टौटी के बर्तनों के मध्य गंगा घाटी में अनुपस्थिति के आधार पर मध्य गंगा घाटी और निम्न गंगा घाटी की संस्कृतियों को अलग–अलग मानने की सम्मति प्रस्तुत की गयी है लेकिन कुछ स्थानीय विभेदों को छोड़कर दोनों क्षेत्रों में एक ही संस्कृति का विस्तार मानना अधिक तर्कसंगत है।

मध्य गंगा घाटी के दक्षिण विन्ध्य क्षेत्र में ताम्र पाषाणिक संस्कृति के प्रमाण कई स्थलों से प्राप्त हुये हैं। ककोरिया, कौड़िहार कोलडिहवा, मधा, टोकवा आदि प्रमुख स्थल उल्लेखनीय है। ककोरिया की ताम्रपाषाणिक संस्कृति के लोग बृहद पाषाण समाधियों के भी निर्माता थे। इस क्षेत्र की पात्र पश्म्परायें मुख्यतः मध्य गंगा घाटी की ही तरह हैं। कोलडिहवा में बहुत से पात्रों को चित्रित भी किया गया है और यहाँ पुच्छल तथा छिद्रयुक्त वाणाग्र भी प्राप्त हुए हैं। बर्तनों के आकार भी दोनों क्षेत्रों में एक जैसे हैं। लघु पाषाण उपकरण, जिनमें दन्तुर कटक ब्लेड भी

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

सम्मिलित हैं, दोनों क्षेत्रों में प्राप्त होते हैं। इस आधार पर कहा जा सकता है कि मध्य गंगा घाटी, गंगा घाटी तथा उत्तरी विन्ध्य क्षेत्र की ताम्र पाषाणिक संस्कृति मूल रूप से एक ही संस्कृति का विस्तार है।

कला– अर्थरत्नों और मिट्टी से बने मनके अधिकांश स्थलों से बहुतायत में मिले हैं, लेकिन ताम्र उपकरणों की संख्या बहुत कम है। बिहार के ओरियप से एक ताम्र चूड़ी का उल्लेख किया जा सकता है। मुण्यमुर्तियों में चिरॉंद से उपलब्ध सिरहिट चपटी चिडियाँ जिसके शरीर पर सिद्ध करके सुसज्जित किया गया है. ओरियप से एक आदिम शैली में बनी नारी मूर्ति तथा प्रहलाद से उपलब्ध खिलीना गाडी विशेष उल्लेखनीय है। पात्र परम्परा के चित्रण अभिप्रायों में क्षेतज अथवा तिरेखायें प्राप्त होती हैं। इन बर्तनों पर चित्रण के प्रमाण सोहगीरा, प्रहलादपुर राजघाट, नहष राज का टीला बनावारी घाट तथा गुरहिवा घाट से प्राप्त हुए हैं। काले लेप वाली पात्र परम्परा के बर्तनों को भी सफेद रंग से चित्रित किया गया है। चित्रण अभिप्राय के अन्तर्गत तिरछे और पड़ी रेखाये ही प्राप्त होती हैं। चित्रित काले लेप वाले बर्तन चिरॉंद, सोनपुर, प्रहलाद पुर राज घाट, गुलरिया घाट तथा पुरे देवजानी से प्राप्त हुए हैं। प्रतापगढ़ जनपद के स्थलों से भी लाल–पात्र–परम्परा के कुछ बर्तनों की बाहरी सतह पर साड़ी या तिरछी रेखायें उत्कीर्ण करके अलंकृत किया गया है और कभी आसंजन विधि से अंगुलियों दबा कर रस्सी की आकृति का अलंकरण भी बनाया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ–

1. शर्मा, जी आर हिस्ट्री टु पी हिस्ट्री, इलाहाबाद, 1980
2. लाल बी बी एवं के.एन. दीक्षित मुंगवेरपुर साइट फार की पोटोहरटी एण्ड अली ऑफ दी सेन्ट्रल गंगा वैनी, पुरातत्व 1981, नं 19 पृ.. 1–7.
3. मिश्र–वी०डी० मिश्रा बी.वी. पाण्डेय जे.एन.एवं पाल. जे.एन. : ए प्रीलिमिनरी रिपोर्ट ऑन एक्सकैवेसन्स एट झूंसी, 1995, प्राग्धारा नं. 6, पृ. 63–67, मिश्र वी०डी०, जे.एन. पाल एवं

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

एम.सी. गुप्ता फरदर एक्सकैवेसन्स एट झूँसी इविडेन्स आफ नियोलिथिक कल्चर, प्राग्धारा, 1998–99, नं. 9. पृ. 45–49. मिश्र वी0डी0, जे.एन. पाल एवं एम.सी. गुप्ता, फरदर एक्सकैवेसन्स एट झूँसी प्राग्धारा 2002–2003, नं 13, पृ. 227–229. मिश्रा वी०डी०, जे. एन. पाल एवं एम.सी. गुप्ता सिग्निफिकेन्स आफ रिसेन्ट एक्सकैवेसन्स टोकवा इन द विन्ध्याज एण्ड झूंसी इन द गंगेटिक प्लेन जर्नल ऑफ इण्टर डिसिप्लनरी स्टडीज इन हिस्ट्री एण्ड आर्कियोलॉजी, 2004 वाल्यूम 1, पृ. 120–126

4. हेतापट्टी (इलाहाबाद जनपद) में इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा उत्खनन किया गया है।
5. सिंहः पी. और अशोक कुमार सिह : अगियावीर : ए प्रीलिमिनरी रिपोर्ट, पुरातत्त्व, 1999, पृ. 117–119. सिंहः पी. और ए.के. सिंहः एक्सकैवेशन्स एट अगियावीर डिस्ट्रिक्ट मिर्जापुर (उ.प्र.), प्राग्धार, 2000, पृ. 31–55.
6. नारायण, ए.के. और टी.एन. राय : एक्सकैवेशन्स एट राजघाट, भाग–1,2,3 एवं 4, बी.एच. यू. वाराणसी। 197, भाग–2.
7. इण्डियन आर्यालॉजी ए रिव्यू, 1967–98, पृ. 48–49.
8. इण्डियन आयोलॉजी ए रिव्यू, 1963–64, पृ. 58.
9. जायसवाल, विदुला : आर्क्यालॉजी, ए सेटलाइट सेटिलमेंट एट सारनाथ, भारती, अंक 26, 2002, पृ. 61–80.
10. नारायण, ए.के. और राय, टी. एन एक्सकैवेशन्स ऐट प्रहलादपुर, बी.एच.यू., 1938 वाराणसी। नारायण, ए.के. और राय, टी.एन. इन इन्डीकेशन ऑफ द चाल्कोलिथिक कल्चर्स एट सम साइट्स ऑफ उत्तर प्रदेश, इण्डियन प्रीहिस्ट्र, 1980, सम्पादक मिश्र, वी.डी. एवं जे.एन. पाल पृ. 298–300.
11. इण्डियन आर्क्यालॉजी, ए रिव्यू, 1964–65, पृ. 49–52, IAR 1967–68, पृ. 46–47, IAR 1970–1971, पृ. 38.

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

12. सिंह, पी. और सिंह, ए.के., ट्रायल एक्सकैवेश्न एट भूनाडीह, बलिया (यू.पी.), प्राग्धारा–8, 1997–98, पृ. 12–29.
13. सिंह,पी. और सिंह, ए.के. ट्रायल एक्शकैवेश्न एट वैना, बलिया (यू.पी.) प्राग्धारा, 1995–96, नं. 6 पृ. 41–64.
14. चतुर्वेदीः एम. एन. एडवांसेस आफ विन्ध्यन नियोलिथिक एण्ड चाल्कोलिथिक कल्चर्स इन दी हिमालय तराई एक्सकैवेशन्स एण्ड एक्सप्लोरेशन्स इन सरयूपार रीजन ऑफ उत्तर प्रदेश, मैन एण्ड इन्यायरनमेन्ट, नं. 9, 1985, पृ. 101–108 चतुर्वेदी, एस०एन० और प्रेम सागर : अली पॉटरी फ्राम सोहगीरा प्रीहिस्ट्री, 1980, सम्पादक मिश्र, वी०डी० एवं पालय जे०एन० पृ० 300.
15. सिंह, पुरुषोत्तम, सिंह, ए. के. और इन्द्रजीत : एकसकैवेशन्स एट इमलीडीह खुर्द, पुरातत्व, 1992, नं. 22 पृ. 120–122

सिंह, पुरुषोत्तम आदि, फरदर इक्सकैवेशन्स एट इमलीडीह खुर्द, प्राग्धारा, 1993–94, नं. पृ. 41–48. 16.
16. तिवारी राकेश और सिंहय के.के., एक्सकैवेशन्स एट लहुरादेवा, सन्त कबीर नगर, पुरातत्त्व 2004, नं. 32, पृ.54.
17. सिंह, बी.पी. खैराडीह, ए चालकोलिथिक सेटिलमेन्ट, पुरातत्त्व, 1989, पृ. 28–34.
18. सिंहः पुरुषोत्तम, इक्सकैवेशन्स एट नरहन, (1984–89) बी.एच.यू. और बी.आर. पब्लिसिंग कारपोरेशन, नई दिल्ली 1994

सिंह पुरुषोत्तम, प्रिल्यूड टू अर्थनाइजेशन इन द सरयूपाश्र प्लेन, अध्यक्षीय भाषण, द इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस, 57वाँ अधिवेशन। 19.
19. वर्मा, बी.एस., एक्सकैवेशन्स एट चिराँद न्यू लाइट आन इण्डियन नियोलिथिक काम्प्लेक्स, पुरात्तत्व, 1961, नं. 4, पृ.19 नारायणय एल.ए., दि नियोलिथिक सेटिलमेन्ट एट चिराँद, दि जर्नल ऑफ बिहार रिसर्च सोसाइटी, 1970, नं. 6, पृ. 16–35

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

20. इण्डियन आर्कियालॉजी ए रिव्यू, 1977–78, पृ. 17–18.
21. इण्डियन आर्कियालॉजी ए रिव्यू, 1981–82, पृ. 10–12.
22. सिंह, बी.पी. अर्ली फार्मिंग कम्यूनिटीज आफ कैमूर फूट हिल्स, पुरातत्व, 1990, नं. 19, पृ. 6–18, सिंहय बी.पी. चाल्कोलिथिक कल्चर्स आफ सदर्न बिहार एज रिवील्ड बाई एक्सप्लोरेशन एण्ड द एक्सकैवेशन्स इन रोहतास, पुरातत्व, 1991, नं. 20.
23. इण्डियन आर्कियोलॉजी : ए रिव्यू 1983–84, पृ. 12–13,
24. इण्डियन आर्कियोलॉजी ए रिव्यू 1984–85, पृ. 12–13.
25. इण्डियन आर्कियोलॉजीः ए रिव्यू 1956–57, पृ. 19
26. इण्डियन आर्कियोलॉजी ए रिव्यू 1959–60, पृ. 14
27. इण्डियन आर्कियोलॉजी : ए रिव्यू 1960–61, पृ. 4–5
28. इण्डियन आर्कियोलॉजी ए रिव्यू 1961–62, पृ. 4–5
29. सिन्हा बी.पी. और वर्मा, वी.एस. सोनपुर एक्सकैवेशन, पटना 1970.
30. इण्डियन आर्कियोलॉजी : ए रिव्यू, 1966–67, पृ. 6–7,
31. वर्मा, बी.एस. ब्लैक एण्ड रेड वेयर इन द बिहार पॉटरीज इन एशिवेण्ट इण्डिया, 1969, सम्पादक, बी.पी. सिन्हा, पृ. 201–211.
32. मिश्र, वी.डी., प्रोटो हिस्टॉरिक इन्वेस्टीगेशन इन प्रतापगढ़ उ०प्र० एटाप्टेशन, विश्वभारतीय शान्ति निकेतन, 1990.
33. इण्डियन आर्कियोलॉजी : ए रिव्यू, 1963–64, पृ. 59